CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्बर ४३५

॥ मार्फत दिगंबर जैन सरस्वती भंडार ॥
॥ मथुरा के लिखा गया ॥

॥ दौलत विलास प्रारंभ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ अथ जकडी लिख्यते। त्रिभुवना-
दि जिनेसुर ध्याउं। सारद अंबा चित लाऊं। द्विविध
परिग्रह परिहारी। गुरन मंस्व पर हितकारी। हितका-
रतारक देव श्रुत गुरु परखि निज उर ल्याइये। दुख
दायक कुपथ विहाय सिवसुखदाय जिनवृष ध्या-
इये। चिरु तें कुमग पगि मोहठग करि ठग्यो भवकां-
नन परयो। व्यालीस दुख लखि जो निमैं जरमरन।
जामनदी जरयो॥१॥ मोहरिपु दई यघुमरिया। तिस
बस निगोद मैं परीया। तहां स्वास एक के माहीं। अर
ष्टादस मरन लहाहीं। लहि मरन अंतमुहूर्त में छ्या-
सठि सहस सततीन हीं। यह तीस काल अनंत यो
दुख सहे उपमाही नहीं। कबहूं लहीवर आयु छिति
जल पवन पावक तरु तनी॥ तसु भेद किंचित कहूं
सो मुनि कहो जो गोतम गुनी॥२॥ पृथ्वी दो भेद बखा-
नं। मृदु माटी कठिन पखानं। मृदु द्वादस सहस बर- १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute ... Trust/e...nasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छ.
२

केकरै। वैतरनी सरित समल जल अति दुखद
तरु सैवल तीनैं। अति भीम वन असिक्रोतस
मदल लगत दुख दैनै घनैं ।४। तिसभरदुं महिमम
रमाई। मेरुसम इस गल जाई ॥ तहां धिति सिंधु
तनी है यौ दुख सहै नर्के अवनी हे। अवनी
तहां [illegible]नै निकलि कवहूं जनम पायौ नरो
सर्वांग सकुचित अति अपावन जठन जननी
कै परौ। तहां अधोमुख जननी रसांसथकी जी
यो नव मास लौं। नाभी रमै कोसीर नाही। सहै आप
निकास लौं ॥६॥ जनम तैं जे संकट पायौ रसनातै
जात न गायौ। लहि बाल पनैं दुख भारी। तरुनापौ
लयो दुख कारी ॥ दुखकार इष्ट वियोग असुभसं
योग सों [illegible]स रोगना। पर सेव गमौ घमसीत पावस
सहै दुख अति भोगनां ॥ काहू न तीय काहू कु वांध
व काहू सुता दुचारनी। किसहू विसनं रत पुत्र दुष्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षकी। पांहनबाईससहसकी। कुनिसहससात
कही उदकबयसहससही समीरकी दिनतीनप
वकदससहसतरुथितिजानसुधीरकी बिन
घातसूक्ष्मदेहधारी घातैं युतगुरुतनलह्योनहीं
यनन्तापनजलनव्यंजनछेदभेदनदुषसह्यौ
३। संखादिदुइंद्रीप्रानी थितिद्वादसबरसबखा
नी। जूंकादितेइंद्रीहैं तैं बासरउनचासजीयेतें। जी
वैवरषदल॥ अलीप्रमुखब्यालीससहसउरग
तनी षगकी बहत्तरिसहसनवपूर्वांगश्रीअप
कीभनी। नरमत्सपूरबकोटिकी। थितिकर्मभूमि
बखांनियै। जलचरविकलबिनभोगभूनरपसु
च पल्यप्रमानीये॥ ५॥ अघवसिकरिनर्कबसेरा
भुगता। तहांकष्टघनेरा। छेदैतिलतिलतनसारा
छेदैहहपरतिमकारा। मेंजोरबज्रानलपचावैध
रिगली ऊपरे। सींचैजुषारेखारसौंदुठकहैअननी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बमगचारीरे॥१॥निजनिवेदविनघोरपरीस
हविफलकह्यौजिनसारीरे॥२॥दौलतजिनि
निजभावपिछानौतिनभवविपतिविदारीरे
॰ग्यापा॰॥३॥इति॥पदसोरठा॥जिनछवि॰
लखतयहबुधिभई।जिन॰टेक मैंनदेहचिदं
कमैंतनजडफरसरसमई जिन॰॥१॥अशुभसु
भफलकर्मसुखदुखमैंप्रथकबागई रागदो
षविभावचालितग्यानथिरथई।जि॰॥२॥प
रिग्रहनआकुलतादहनविनसीसमतालई
दौलपूरबअलभआनंदलह्यौभवथिति
जई।जिनछवि॰३॥इति॥पदराग॥सोरठा॥जि
नवैनसुनतमोरीभूलभगी॥जिनटेक॥कर्मसुभा
वभावविभावतनकोभिंनदिखावनसुमति
जगी॥जिन॰१॥निजअनुभवतिसहजग्यायक
तासोचिरुषतुषमैलपगी॥स्यादवाद॥धुनिनि

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जसरै ॥४॥ इतिजकडीसंपूर्णं ॥ अथपददौल
तरामजीकृतलिख्यते ॥ पद ॥ चिन्मूरतिदृग
धारीकीमोहिरीतिलगैहैअटापटी ॥ चिन या त
हिरनारककनदुखभोगेअंतरसुखरसगटी ॥
हीरमतअनेकसुरनिसमपै तिसपरणति
तैंनितहटाहटी ॥१॥ चि०॥२॥ ज्ञानविरागसक्ति
तेविधिफलभोगतपैविधिघटाफटी ॥ सदनिवा टी
सीतदपिउदासीतातेआस्रवछटी ॥ चिन्मू०॥२॥ छटी
जेभवहेतअबुधकेतेतिसकरतबंधकीझटा
झटी ॥ नारकपसुतियसंढविकलत्रयप्रकृति
निकीह्वैकटाकटी ॥३॥ संयमधरिनसकैसंय
मधारनकीउरचटापटी ॥ तासुसुजसगुनकी
दौलतकेलगीरहैनितरटारटी ॥ चिन्मू०॥४॥ इति
॥पदसंपूर्णं॥ आपानहींजांनौतूंकैसाग्यानधा
रीरे ॥ टेक दोहाउनतकरिक्रियाआपकोमांनतनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रेक ॥ इनहीकेवस तु अनादितें निजसरूपनल
खावैहे ॥ पराधीनछिनछीनसमांकुलदुरगतिवि
पतिचखावैहे ॥ हेमन ॥ १ ॥ फरसविषयकेकारन
वारनगरतपरतदुखपावैहे ॥ रसनाइंद्रीवसझष
जलमेंकंटककंठछिदावैहे ॥ अलिनिजग्रांनेषपावे
नैनविषयवसिदीपसिखामें अंगपतंगतपावैहे
हेमन ॥ ३ ॥ करणविषयवसिहिरनअरण्यमेंखल
करिप्रांनलुनावैहे ॥ दौलततजइनकूं जिनकोभज
यहगुरसीखसुनावैहे ॥ ४ ॥ इति ॥ पद ॥ हे जिनते
तेरोसुजसउजागरगावतहे ॥ मुनिजनग्यानीदुर्जे
यमोहमहाभटजानें निजवसिकीनेंजगप्रानी सो
तुमध्यानकृपांनपांनगहिततखिनताकीथिति
भांनी हेजिन ॥ १ ॥ सुप्तअनादिअविद्यानिद्राजि
नजननिजसुधिबिसरानी ॥ है सचेतनिननिज
निधिपाईश्रवनसुनीजवतुमवांनीहे ॥ जिन ॥ २ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रमलजलतैं विमल भई समभाव लगी। जिन ॥ २ ॥
सैसयमोहभ्रमता विघटी प्रगटी आतमसौ
जसंगी॥ दौल अपरव मंगल पायौ सिवसुख
लैंन है सउमगी। जिन ॥ ३ ॥ इति ॥ पद रागगरी पचंदी
॥ तू अपनौ रूप न। इपिछानैरे रा चिरह्यौ परमां
हि अपानैं। तू०। टेक। अवचलविनमूरति विनि
मूरति सुखी होनतसुजानैरे रा चि० ॥ १ ॥ तन धन भ्रा
त तात सुत जननी तू इनकूं निज जांनै रे ये पर तिं
नि हि वियोग योगमें यौं ही सुखदुख मानै रे। रा चि २
चाह न पाये पाये तिस्ना सेवत ज्ञानजघानै रे ॥ वि
पति खेत विधिवंधहेत पै जानै विषय रवानै रे। रा
चि० ॥ ३ ॥ नरभव जिनश्रुत श्रवन पाय अब कारे नि
ज सुहितसयानै रे। दौलत आतमज्ञानसुधारस
पीयौ सुगुरुबखानै रे। रा चि ॥ ४ ॥ इति ॥ पद रागा ॥
हेमन तेरी को कुटेव यह करन विषयमें धावै है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिकावलिसिरसोहैमांनूं धुवाउउयाहै। देखो॰
३। जीवनमरनअलाभलाभजिनतृणमनि
कूंसमभायाहै॥ सुरनरनागनमैंपदजाकेदौ
लजासुजसगायाहै॥ देखो॰।४॥ इति॥ पदराग
कल्यान॥ जिनछबितेरीयहधनिजगतारन
टेक॥ मूलनफूलदकूलत्रसरलनसमदमका
रनभ्रमतमवारन। जिनछवि॰।१। जाकीप्रभुता
कीमहिमातेंसुरनधीसतालागतसारनअव
लोकतभव्ययोकमोक्षिमगचरितकरतनिज
निधिउरधारनजिन॰।२। जज्ञतभजतअघतो
कोअचिरजसमकितपावनभावनकारनता
ससेवफलयेवचहैनितदौलतजाकेसुगुनउ
चारन। जिन॰।३॥ इति॥ पद॥ मेहसखोनिर
खौमुखतेरी॥ नास्ता निरतमयनमूहलयनवैं
ननिवारनमोहअंधेरीसैं॥१॥ परमैंकरमैंनिज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलमय तुम जग में उत्तम तुही सरन सिवम
गदानी॥ तुम पद सेवा परम औषधी जन्म जराम
न दुखहानी। हे जिन०॥३॥ तुम्हरे पंच कल्यानक मां
ही त्रिभुवन मोद दसा ठांनी॥ विष्णु विदांबर जिष्णु
दिगंबर बुध सिव कहि ध्यावत ध्यानी॥ हे जिन०
४॥ सरब दरब गुण परजय परणति तुम सुबोध
मैं नहि छानी। ताते दौलदास उर आसा प्रकट क
रौ निज रस सांनी। हे जिन०॥ इति॥ पद॥ देखो जी
आदीस्वर स्वामी कैसा ध्यान लगाया है॥ देक। जग
त विभूति ज्यों तजि के निजानंद पद ध्याया है। सु
रभित स्वासा आसा वासा नासा दृष्टि सुहाया है। १
देखो। कंचन वरन चलै मन रंच न सुरगिर ज्यों थि
र थाया है। जास पास अहमोर म्रगी हर जात वि
रोधन सा या है देखो०॥२॥ सुध उपयोग हुतासन
मैं जिन वसु बिधि समिध जलाया है। स्यांमल अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नी। चेतन॰ ४॥ इति॥ पद॥ मैं॰ आई याहो जिनसरनति
हारी रेक। मै चिरदुखी विभावभावनैं स्वाभाविक नि
धि॰ आपविसारी मैं॰ १॥ रूपनिहारिधारि तुव गुन
सुंनि वैंन होन भवि सिवमगचारी। योमम कारि
ज के तुम कारन तुम्हरी सेव येव उरधारी मैं॰ २॥
मिल्यो॰ अनंत जनम मैं॰ अवसर॰ अवविनऊ हे भव
सरतारी। परमै इष्ट॰ अनिष्ट कल्पना दौल कहै झ
मेट हमारी मैं॰ आ॰ इति॥ पद रागदीपचंदी॥ चलिस
खी देखन नाभिराय घरि नाचत हरि नटवा चलि॰ टेक
॰ अद्भुत ताल मंःस आकृति धर खवन राग यट वा च
लि॰ १॥ मणिमय नूपुरादि भूषन जुन चुन सुरंग
पटवा हरि कर नखन नै पैसु रनिय पग फेरत कटि
वा चलि॰ २॥ किंनर कर धर वीन वजावत लावन ल
परुटवा। दौलत ताहि लखै च खित पनैं रूकत सिव
वटवा चलि॰ ३॥ इति॥ पद॥ मैंन छाय रहो है हौ जैं भव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुधि अबलौंभवसरमैंडुखसहेनोघनेरो॥ सोदुख
भाननस्वपरपिछाननतुमबिन आएभकारनहै
रोमैं॥२॥चाहभईसिवराहलाहकीगयोउछाह
असंजमकेरो।दीलननहिनबिरागचित आयो
जांनौरूपज्ञानदृगमेरोमैं।३।इति॥परकल्यान
मैं॥चेतनयहबुधिकौनसयानीकहीसुगुरुहि
तसीखनमांनी।टेक॥कठिनकाकतालीज्यौंपायो
नरभवसुकलश्रवनजिनबांनी॥चेतन।१॥भूमि
नहोतचांदनीकौज्यौंतौनहिधीज्ञेयकोज्ञानी॥व
सतरूपयौतूयोहीसदहटंकरिपकरनसौंजविरा
नी॥चेतन।२॥ज्ञानहीहोय अज्ञानरागरूपकरि
निजसहजस्वछताहानी॥इंद्रीजडतिनविषयअ
चेतनतहांअनिष्ट इष्टताठानी।चेतन।३।चाहेदु
खसुखही अवगाहे अबसुनिविधिजोहैसुखदांनी॥
दोह आपकर आप आपमैं ध्यायलपसमरससां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छं.
५

री। नेसबको दिसनाईसषेजुतनीचतसुरनरनारी
नवरसगानठांनकांननकौ उपजावनसुखभारी
षंकलैलावनलंकलहावनदुलिलखिदामिनिला
जै वारी॥२॥ गोपिगोपालियजायमासुहिराकरी
नासुघुनिसारी॥ सुखनिद्राजननीकूं करिनमिश्रं
कं। लीयोजगनारी॥ लैवसुमंगलद्रव्य दिससुरीच
ली अग्रसुभकारी। हरषिहरीचविसहसकरी
नवजिनवरनिरखनकाजेवारी॥४॥ नागजेंद्रपे
प्रथमइंद्रनैं श्रीजिनेंद्रपधराये। द्वतीयछत्रदिय
ततीयतुरीयहरिसुरधरिचमरढलाये। संखसक
जयसवदकरतनमलंघिसुराचलछाये। पांडुसि
लाजिनथापिनचौसचीदुंदुभिकोटिकवाजे॥ वा
री॥५॥ फुनि॥ सुरेसनैं श्रीजिनेसकौजन्ममहौंनसु
भठानौंहेमकुंभमरलायोहायन। छीरोदधिजलआ
नैंबदनउदर अवगाहयेकचौवसुजोजनपरमां ५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुकीस्यांमवरनछवि। मेरेनैंनठेक मणिमयतीन
पीठपर अंबुजतापर अधरठहीहेहो॥१॥मारमार
नपधारजारविधिकेवलरिधिलही। आरतीसअ
तिसयजुतमंडितनवदुगदोषनहीहेहो॥२॥जाहि
सुरासुरनमनसततमस्तकतेंपरसिमहीसुरगुर
उरअंबुजप्रफुलावनअद्भुतभांनसहीहेहो॥३॥ध
रिअनुरागविलोकतजाकोदुरतिनसैसबही॥दो
लमहिमांअतुलजासकीकापेजातकहीहेहो॥४॥
इति॥पद॥वारीहोबधाईयासुमसाजेवारी॥टेक॥
विरचसैंनअैरादेवीग्रहजिनभवमंगलछाजे॥१
सवअमरेसअसेसविभौजुतनगरनागपुरआये
नागदतसुरइंदुचवेतैंअैरावतसजिधाये॥लख
जोजनसतबदनबसुरदप्रतिसरठहराये॥सरसर
सौंपनवीसनलिनप्रतिपदमपचीससविराजे॥वारी॥
२॥पदमपदमप्रतिअष्टोतरसतठमैसुदलमनहा

वदन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लरवियत उडनकुभावकहू अबै मोह उलूकलजा
याहै। हंसकोककोसोकनसो निजपरणतिचकवी
पायाहै॥ जिनवर ॥२॥ कर्मबंधकजकोसबधे विरुम
नि अलिमुंचनपायाहै॥ दौलउजासनिजातम
अनुभवउरजगअंतरछायाहै॥ जिन॥४॥ इति॥
पदसोरठा॥ सबमिलिदेखौहेलीमारीहै॥ तिहूंजगप
लअदनरसालसबमिलि। टेक॥ आयेजुतसमो
सरनकृपालविचरतअभयव्यालमरालफलि
तभईसकलतरुमाल सब॥१॥ नैननहालभरकु
दिनचालवैनविदारिविभ्रमजाल॥ छबिलखिहो
तसंतनिहालः सः॥२॥ जेनेनजजतजाहित्रिकाल
परमैंतजतममताजालते निजअजतअवविस
लस॥३॥ वंदनकाजसाजसमाजसंगलीयेसुजन
पुरजनब्राज॥ अगणकचलतहैनरपालसब॥४॥
योकहिमोदजुतपुरबाललखनचलीवरभु[illegible]न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नो। सहस आठकरिकरहरि जिनसिरदारतजय धु
निगाजेवारी ॥६॥ फिरिहरिनांरिसिगारिस्वामितन
जनेसुराजसगाये। परबलीविधिकरिपयानमुद
दांनिपितासरलाये। मनिमय आगनमैंकणकास
नपैश्रीजिनपधराये। तांडवनृत्यकरैसुरनांपक
सोभासकलसमांजेवारी ॥७॥ फिरिहरिजगगुरपि
नरपोखिसांतेसघोषजिननांमासाधिसकलविज्ञ
निजनियोगसुरअसुरगयेनिजधामांत्रपदधार
तिनवारुचरनकीदोलतकरतसदाजेवारी ॥८॥ इति
पद ॥ जिनवरआंननभांननिहारतभ्रमतघांन
णसयाहे ॥ टेक ॥ वचनकिरनप्रसरननैंभविजन
मनसरोजसरसायाहे। भवदुखकारनसुखविसना
रनकुमयसुपंथदरसायाहै ॥ जिन० ॥ १ ॥ विनसाईक
जजलसरसाईनिशिचरसमरदुरायाहे। तसकरप्र
बलकसायपयलायेजिनधनवोधचुरायाहै। जिन०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सु॰
११

न॰अष्टोतरसहस्रलखिनलखिकलिलगमैं जा
वचदीपसिखामैं मुनिविचरैसिवमारगमैं ॥२॥
॰अरि॰। जासपासतैं सोकहरनगुनप्रगटभयोन
गमैं। ब्यालमरालकुरंगसंघकोजानविरोधमे
॰अरि॰॥३॥ जाजसगगानउलंघनकौउघिमतुनीष
गमैं। दौलनांमतसुसुरतरुहै याभवमरुथलम
गमैं। ॰अरि॰।४॥ इति॥ पद॥ भजिरिसिपतिरिसि
भेसताहिनितनमैं ॰अमर॰असुरामनमथमथर
रसावनसिवपथग्रथरथचक्रधुरा। टेक। ऊष
रगारभक्षमांसपुरवसुरकरीसुवरणधरा॥ ज
नमतसुरगारिधरिसुरगणजुनहरिपयन्हौनक
रा॥ भजि॰ नरतनरलकीविलपदेखिभ्रमलहिवि
रागसुधिरातवहीदेवरिस ॰आयनामसिरजि
नपदपुष्पधराभजि॰।५॥ केवलसमयजासव[illegible]
रविनैं जगभ्रमतिमरहरासुदृगबोधचारित्र[illegible]

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पालदौलतनमतकरधरिमालसव॥५॥इति॥
पदराग॥निंपदअयानानैंआपनजानांनाहकभ
रमभुलानावे।निपद।टेक॥पीयअनादिमोहम
दभोयापरपदमैंनिजमानावे नि॥१॥चेतनचिंन्ह
भिंन्नजडतासोंज्ञानदरसरससानावेतननमैंछिप्यौ
लिप्यौनतदपिस्योजलमकंजरलमानवेनिप॥२
सकलभावनिजनिजपरनतिमयकोइनहोयबिरा
नावे।तदुखिपापरक्रतमांनिज्यौंनभताडनभ्रमठा
नावे॥निप॥३॥अजगानमैंहरमलिआपनपौभयौ
रीनहैरानावेदौलसुगुरुधुनिसुनिनिजमैंनिजपा
यलहयौसुखयानावे।नि॥४॥इति॥पदरागलावणी
॥अरिरजरहस्यनैनप्रभुअरहनजैवंतोजगमैंदेव
अदेवसेवकरिजाकीधरैमोलिपगमैं।टेक।तरु
असोकजाकोअवलोकतसोकथोकउजरे।पारजा
तसंतानकादिकेवरषत्तसुमनवरे।अरि॥१॥जान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निसवदुति लाजंता। तेज थोक अवलोकलगत है
कोकसचीकंता। भव॰॥२॥ जास अनूपरूप कोनिर
खहरखत है संता। जाकीधुनिसुनिमुनि निजगुनपु
नपरगरउगलंता। भ॰॥३॥ दौलतौल विनजसतसु
वरणतसुरगुर अकुलंता। नाना भाक्षरसुनिकोंनखो
नसेरौंकनाकुरंता। भव॰॥४॥ इति॥ पद॥ उरगस्वरग
नरईससीसजिसआतपपत्रधरे। कुंदकुसमस
मसमचमर अमरगन दारतमोदभरे। टेक॥ त
रु असोकजाको अवलोकनसोकथोक उजरे। पा
रजात संतानकादकेवरषतसुमनखरे। उर॰॥१॥
मणिविपीठअंबुजपेसांतरसराजत जिनसुथिरे
वरनसुथिरे। वरनविगतजाकीधुनिकौसुनिभवि
भविसिंधुतरे। उरग॰॥२॥ सादावारहंकोदिसानि
केवाजततूर्यखरे। भामंडलकीदुतिअखंडसोंरवि
ससिमंदकरे उरग॰॥३॥ ज्ञानअनंतअनंतदरसव १२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लहिभविभवसिंधुतराभजि॰।३।जोगसंघारिनिवा
रिसेसविधिनिवसेवसुमधुरा।दोलतजेजाकौजस
गावैतेह्वैअजअमरा॥४॥इति॥पदलावणी॥ध्यां
नकृपांनपांनगहिनांसीत्रेसठिप्रकृतिअरी।सेसपच्या
सीलागिरहीहै।ज्योजेवरीदेकदुठअनंगमातंगभंगक
रहेप्रबलंगहरी।जापदमक्तिभक्तिजनदुखदवान
लमेघझरीध्यान॥१॥नवलधवलपलसोहैकलमें
क्षुधितषव्याधिटरी।हलतनफलकअलखनखच
वतनगतिनभमांहिकरी।ध्यान॰॥२॥जाविनसर
नैंजरधरमहाअसातभरी॥दौलतासपददमहोनहै
परन
वासमुक्तिनगरी॥ध्यान॥३॥भवनसरोरुहसररभ
रिगुनपूरितअरहंता॥दूरितदोषमोषपथघोष
ककरनकर्मअंता॥टेक॥दरसवोधतैंजुगपतिलखि
जानैंजुभावनांता।विगताकुलजुनसुखअनंतविन
अंतसक्तिवंता॥भव॰॥जातनजोतिउद्योतथकीअ

कवहूं न हित उपजायो ॥ टेक ॥ सुकल सुदेव सुगुरु
सुसंग हित कारन पाय गमायो हम ॥१॥ ज्यो सिसु नां
चत आपन मांचत लखनहार बोरायो ॥ त्यो श्रुत
बांचे आपन राचे औरनि कूं समझायो ॥ हम ॥ सु
जस लाह की चाह न तजि निज प्रभुता लखि हरखायो
विषय तजे न रजे निज पद मैं पर पद अपद लुभा
यो हम तो ॥२॥ पाप त्यागि जिन जप न कीनों सुमन
चाप तप तायो चेतन तन को कहत भिंन पै देह स
नेही थायो हम ॥३॥ यो चिर भ्रमि भई हमरी अव
कहा भयो पछितायो ॥ दौल अजौं भव भोग रचौ म
ति यो गुर वचन सुनायो ॥ हम तो ॥४॥ इति ॥ पद ॥ गु
ल कहत सीख इमि वार वार ॥ विषय सम विषियन को
टार टार ॥ टेक ॥ इन सेवत अनादि दुख पायो जनम
मरन वहु धारि धार ॥ विष ॥१॥ कर्माश्रित बाधा जुत
नांसी हंद वदावन वंधकारा ॥ विष ॥२॥ ये भई [illegible] १३

का।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लसरम अनंतभरेकरुनांमतदरतपदजाकेदौल
तहृदयधरेउर॥६॥इति॥पद॥मनवचनतनकरि
सुद्धभजोजिनिसवभलापाया।औसरकेरिमिले
नहीऐसायौसतगुरगाया॥टेक॥वस्याअनादि
नगोदनिकसिफिरिथावरदेहधरी।कालअसं
ख्यअकाजगुमायौनेकनसमझिपरी॥मन॰॥१॥
चिंतामणिदुर्लभलहियेज्यौंत्रसपरजायलही।
लटपिपीलअलिआदिजन्ममेंलह्यौनज्ञानकही॥
मन॰॥२॥पंचेंद्रीपसूभयौकष्टतैंनहांनवोधल
हास्वपरविवेकरहितविनसंजमनिसदिनभार
हामन॰॥३॥चोपयचलतनरतननलहियेज्यौमनुष
देहपायजेविषयनिसगखोवै।तेनरमूढअजान
सुधारसपायपावधोवै॥मन॰॥४॥दुर्लभनरभनरभ
वपायसुधीनेजैनधर्मसेवै।दौलतजेअनंतअवि
नासीसुखसिवकोवेवैमन॥६॥इति॥पद॥हमतौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लकै विरचित मोहविलासनि कासिं हृदयसे
मोही॰ ॥ पद। जो यतू॰ आनादि हीनैं भ्रम्यौ सिव
गैलवा ॥ टेक। मोह मदवारि पीयौ स्वपद विसा
रि दीयौ पर॰ अपनाय लीयो इंद्री सुखमैं रचियौ
भव तैं न भीयौ न तजियौ मनमैलवा। जियो॰ । १
मिथ्याज्ञान॰ आचरन धरि करि कुमरन तीनि
लोक की धारनि तामैं कियो है फिरन पायौ न स
रंन न लहायौ सुख सेलवा ॥ जिय॰ ॥ २ ॥ ॰ अब नर
भव पायौ सुथल सुकुल॰ आयौ निज उपदेस भा
यौ दौल झट छिटकावौ परनति दुखदायनी चु
रैलवा। जियनू॰ । ३ । इति ॥ पद ॥ चेतनराय॰ अब ध
रि सहज समाधि जो विनसै भव व्याधि। चेत॰ । टे
क। मोहठग्यौरी खायकै रे परकूं अपा जांनि भूलि
निजातिम रिद्धि को पायै दुख महांन ॥ चे॰ । १ । ज्ञापि
॰ अनादि निगोद दोयमैं परयौ कर मर्वौ सिजाय ॥ सा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्निहेतज्योतिसनवुफावनखारवार।विय॰३।इन
मेंसुखकलपनाअवुधकेवुधजनमांनतदुखभ्र
चार।विय।।४।इननजिज्ञानपियूषचख्यौविन
दोललहीभववारिपार।।विय॰।५।।इति।।पद।।
मोहीजीवभरमतमतैनहिवस्तुस्वरूपलखैहैतै
सें।मोही॰टेक।जेजेजडचेतनकीपरणतिने॰
अनिवारपरणवैअैसें।दयादुखीसहकेशिवि
कलपयोनहीपरणमैपरिणमैंअैसेमोही।अ
सुचिसरोगसमलजडसरतिलखतविलान।
गगनघनजैसैंसोतननाहिविसारिअपनपोव
हतअवाधरहेथिरकैसेमोही॰।२।सुततियवंधु
वियोगयोगयोजोसरायजननिकेसेपेसे।वि
लखितहरखितसठअपनेंलखिरोवतहसतम
तजनजैसेमोही।।३।।जिनरविवैनकिरनलहिजि
ननिजरूपसुभिन्नकेसेपरमैसैं।सोजगमोहरो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जागीलयस्वछमहाव्रतनिकीउमंगीके।प्रथम
सुकलश्रेणीआरोहभयेगयेमोहआवरणअं
तरायसंगीके।ज्ञानगहिकतानिजानंदरसमग्न
ह्वैकीनैंनिजलगाकर्मछूताकीत्रभंगीके।।१।।अ
थआरतीलिख्यते।।करौआरतीवरधमांनकी
पावापुरनिरवांनथांघकी करौ॥रागविनासव
जगजनतारें।दोषविनांसवकर्मविदारेकरौ।सी
लधुरंधरसिवत्रियभोगी॥मनवचकायनकहि
येजोगीकरौ॥रतनत्रयनिधिपरगहछारी ज्ञा
नसुधाभोजनव्रतधारी करौ।लोकअलोकव्या
पिनिजमांही॥सुखमेंइंद्रीसुखदुखनाही करौ।
पंचकल्याणकपुज्यविरागी।विमलदिगंबर...
वरत्यागी।करौ।गुणमणिभूषणभूषनस्वा...
नस्वामी।जगतउदासजगंतरजामी।करौ।।क
हेकहालौंतुमसवजानौं।धानतकीअभिलाख १५

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सउस्वासमझारतहांभवमरनअठारहथायचे॰ र
कालअनंतमहांयोवीतोजबमई मंदकसाय। भू
जलअनिलअनलकुनितरुहैकालअसंख्य
गमाय।चेत॰।३।क्रमक्रमनिकसिकटिननैंपाईसं
खादिकपरजाय।जलथलखचरहोयअघटोनैं
तिसवससुभ्रलहाय।चेत॰।४।तहांसागरलोंबहु
दुखपाये निकसिकभीनरथाय।गर्भजननेंमसि
सुतरुणएविरधदुखसहेकहेनहिजाय।चेत॰।५।
कबहूंकिंचितपुन्यपाकतैंबहुविधिदेवकहाय
विषयआसमनआसलहीतहांमरनसमैविल
लाय।चेत॰।६।योअपारभवखारवारमैंभ्रम्यो
अनंतेकाल।मेलनअवनिजभावनावचदिलैभ
वाब्धिकीपालचेत॰।७।कवित।समकतदरस
सुधरादोघटरंगभूमि।अनंतानुबंधीभदभागो
मोहदंगीके।स्वरूपआचरनसक्तिप्रबलप्रचंड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमनिराकुलपददरसावनवरविरागताकारी
प्यारी॥१॥पदमस्थनबिनपैसुंदरतासुरनरमुनि
मनहारी।प्यारी॥२॥जाहिबिलोकतभवनिजनिधि
लहिबिरुविभावताटारी॥३॥निरनमेषतेंदेखिस
चीपतिसुरतासफलविचारी॥प्यारी॥४॥साअंकि
नभ्रमतालरिवभासनहेयरमाजगसारी॥प्यारी॥५
महिमाअकथहोनलखिनाकौपसुसेसमकिनधा
री।प्यारी॥६॥दौलतरहौनाहिनिरखनकीभवभवटे
वहमारी।प्यारी॥७॥इति॥पद॥भैरव॥हेनरसी
खसयानैंमानतक्यौंनाहिरे॥टेक॥भयौअचेतमोहम
दपीकैअपनीसुधिविसरानी हेनर।दुखीअनादि
कुबोधअव्रततैं।फिरितिनिसौंरतिठानी।ज्ञानसुधा
निजभावनचाख्यौपरपरणतिमतिसानी।हेनर॥२
भवअसारतालरवैनक्यौंजहांनृपह्वैकृमबिटथानी
सदननिधननृपदासस्वजनरिपुदुखहरिसेंज्ञानी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमानौं करै ॥ इति ॥ पद ॥ अबमानलै रेजीय
मेरी ॥ पराधीन सब ठाठ ॥ जगत कै अवतू चेति
सबेरी ॥ मांनि ॥ टेक ॥ परपरणति मैं तूं भटकन है
सो तौ दुख की टेरी ॥ निजपरणति मैं भला होन है क
रमन आवतन तेरी ॥ अब ॥ १ ॥ अब तू चेति सभालि
ज्ञान करि फिरि न मिलै या वेरी ॥ ज्ञानानंद रूप लखि
साहिब जौ निधि पावै तेरी ॥ अबमा ॥ २ ॥ इति ॥ पद
॥ ऐसा है सो ईबे विधि यौं दाम द्भानै ऐसा ॥ वि
षय दुष अर दुख फल तिनि कौ यो नित चिंतन
ठानैं विष ॥ अनुपयोग उपयोग स्वरूपी तन चेत
न कूं मानैं ॥ विषि ॥ वरनादिक रागादि भावनैं भिन्न रू
प निज जानैं विष ॥ ३ ॥ स्वपर जांनि रुखरागहांनि नि
ज मैं निज परणति सानै ॥ विषि ॥ ४ ॥ अंतर बाहिर कौ
परिग्रह तजि दौल वसै सिव थानैं ॥ विषि ॥ ५ ॥ पद रा
ग ऊंझोटी मै ॥ प्यारी लागो म्हानैं जिनछवि प्यारी हो ॥ टेक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिरांम्रतनाशनजनमकलेसाहै। नामसमंत्रजैपैभ
यतिनअघअहिनसतअसेसाहै। सुरअहमिं
द्रखगेंद्रचंद्रकैअनुक्रमहोहिजिनेसाहै। लोकअ
लोकत्रेयज्ञायकपैरतनिजभावचितदेसाहै। रा
गविनासेवकजनतारकमारकमोहनदेसाहै। भंद
समुद्रविवर्द्धनअद्भुतपूरनचंद्रसुवेसाहै। दोलन
मेपदतासजासशिवयलसमेदअचलेसाहै॥२॥
इति॥पद॥कुंघनकेप्रतिपालकुंघजगतारसारगु
नधारकहै। जाकीसमोसरनवहिरंगरमागनधार
अपारकहै। संम्यकदरसनबोधचरनअध्यात्मर
माभरभारकहैदसधाधर्मपोतकरिभव्यनकूंभव
सागरतारकहै॥वरसमाधिवनघनविभावरजपुं
जनिकुंजनिवारकहै॥जासध्यानहस्तावलंबदुख
कूपविरूपउधारकहै॥तजिछखंडकमलाप्रभुअ
मलातपकमलाअंगारकहै॥द्वादससभासरोजस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेनर॥२॥देहनेहगदगेहनेह रसहै।वहुविपतिनि
सानी।चउमंलीनखिनखीनकरमकनवंधनसि
वसुखहांनी॥३॥चाहज्वलनईंधनविधिवनआकु
लताकुलखांनी॥ज्ञानसुधारससौखमरविवेवि
षयअंमरतमरतदांनी।हेनर॥योलखिभवतनभो
गविरचिकरिनिजहितसुनिजिनवांनी।तजिरुख
रागदोलअवअवसरयहजिनचंद्रवखांनीहेनर
॥४॥इति॥पदलावणी॥पासिअनादिअविद्यामेरी
हरनपासपरमेसाहै।चिद्विलाससुखरासप्रकास
वितरनविभौनदिनेसाहै।दुर्निवारकंदर्पसर्पको
दर्पविदरनखगेसाहै।दुठसठकमठउपद्रवप्रलय
समीरसुवर्णनगेसाहै।ज्ञानानंतअनंतदरसवलसु
खअनंतनपदेसाहै॥सातुरविरमेलीववमवति
रथविविवसदमेसाहै॥१॥कोविनजिनमुनिअवना
सवाणिसवेवनपारकुसेसाहै।वदनचंदुतेकरै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria Varanasi

१८ ममोहरैसलकोहरिजोजगभरमावनहैं ॥ २ ॥ इति ॥
पद ॥ जैजिनवासुपूज्यसिवरमनीरमनमदनदउप
रनहै ॥ बालकालसंजमसंम्हालरिपुमोहव्या
लमदनमारनहै ॥ जाकेपंचकल्यानभयेचंपापुर
मैसुखकारनहै ॥ बासवबृंदअमंदमोदधरिकि
येभवोदधितारनहैं जे० ॥ १ ॥ जाकेवैनसुधात्रिभु
वनजनकोभ्रमरोगविडारनहै जागुनचिंतनअ
मलअनलमृतजनमजरावनजारनहै ॥ जे० ॥ २
जाकीअरुनसांतिछविरविभादिवसप्रबोधप्रसा
रनहै ॥ जाकोचरनसरनसुरतरुमनवंछितसिवफ
लविस्तारनहै ॥ जाकोसासनसेवतमुनिजेचार
ज्ञानकेधारनहै ॥ इंद्रफनिंदमुकटमनिदुतिम
लजापदकमलपखारनहै ॥ जाकोसेवअछेवर
माकरचहुंगतिपतिमउधारनहै ॥ जाअनुभवघन
सारसुआकुलतापकलापनिवारनहै ॥ बादसमेजि १८

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रम्यमतंलुअंकूरउपारकहैहै। गुनअनंतकहिल
हितअंतकोसुरगुरुसेवुधहारकहै॥ दौलनमेंहे
कणुकंरभवहंदटारिवहुवारकहै॥२॥ चंद्रनननि
नचंद्रनाथकेचरनचतुरचितआवतहै। कर्मचक्र
चकचूरचिदानंदचिन्मूरतनपरपावतहै॥ हाहाहूहू
नारदतुंवरजासअमलजसगावतहै॥ परमास
चौसिवासमादिककरधरिवीनवजावतहै। जिन
रत्नउपदेसमाहिहितअहितजनतदरसावतहै
नृपरनरसुरनरमुनियदचिरविकटविमोहन
सावतहै॥ जाकीचंद्रवरनतनडतिसोकोटिकच
दुतिपावतहै॥ आनमनोतउपोतनमाहिलनपेय
अंनंनदिपावतहै॥ नितउदयअकलंकअछीन
सुमुनिउडचितरमावतहै॥ जाकोज्ञानचंद्रिका
लोकअलोकमाहिनसमावतहै॥ सांपनिनिपुर्थ
नवपानंदनकुंकिरसिसानवावतहै। संसयविभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nariya Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निसतनमै निरखि जेवरी भुजगमांननरभयउर
आनौं॥ चेतन॰। ज्यौं कुआनवसमहिषमांनि निजप
सिनरठरामांहि अकुलानौ॥ स्यौ चिरमोह अवि
द्यापैरीतैसैनेही रूपभुलानौं।२॥ तोपनैलज्यौम
गनतनकौ उपजअपजैमैं सुखदुखमानौं कुनि
परभावनकौ करताहै तैं तिनकूं निजकर्मपिछा
न्यौ। चेतन॰॥३॥ नरभवसुथलसुकुलजिनवानी
काललब्धिवलजोगमिलानौ दौलसहजतजिउरा
सीनताते अपरोअपडअकोअजमानौं चेतन॰।४॥ इति
॥परराग सोरठ॥ नौवेनामैं सरधांनघनौछै म्हारै
छवि निरखतहीयसरसावै। टेक॥ तुमधुनिघनप
रचहनदहनहरवरसमतारसकरवरसावै।१॥ सु
प॰॥ रूपनिहारतहीवुधिह्वैसो निजपरचिह्नजु
दैरसावैहैं चिदंकअकलंकअमलथिरइंद्रिय
सुखदुखजडफरसावै॥२॥ याराग॥ चानविरागासुगु २९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवंइजासुषरजसउजासकौपारनहै। भक्तिभार
तैनमैदौलकौचिरविभावहुसटारनहै। जिनि। इति
॥पद॥ जैसिवकामिनकंतवीरभगवंतग्रनंतसु
खाकरहै। विघिगिरगंजनवुधमनरंजनभ्रमतम
भंजनभाकरिहै। जै॥ जिनउपदेस्यौदुविधिधर्मजो
सोसुरसिधिरमाकरहै। भविउरकुमदनिमोदनभ
वतपहरनग्रनूपनिसाकरहै। जै॥ परमविरागर
हैंजगतैंपैंजगतजंतुरछ्याकरहै॥ इंद्रफनिंद्रखगिं
द्रचंद्रजगठाकरजाकेचाकरहै। जासग्रनंतसुगु
नमणिगनगिनतगनतगणपगपारथाकरहै। जाश्र
मुकेपदनवकेलललछिमिसुकमलाकमलाकरहै॥
जाकौध्यानकपानरागरुषपासहरनसमताकर
है दौलतमैकरजोरहरनभवबाधाशिवपाधाकरहै
जैसिवकामिनकंतवीर॥ इति॥ पद॥ जैनवैनपोही
भनचावौ जोमदनामसमनिलावनलावौ। टेक। जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥२॥ तन धन सदन सुजन जन कुसौं जनमि ये पर जाय बि
रानी ॥ इन परनमन रसन उपजत सो तैं दुख सुख करि
मानी ॥ हे नर० ॥३॥ इस अज्ञान तैं बिरदुख पाये तिनि की
अमित कहानी ॥ ताकूं तजि दुग्यान बरनम जि जि
न परणति शिव सांनी ॥ हे नर० ॥४॥ यह दुरलभ नरभ
व सुसंगत हि तब छरवबन बांनी देल कारि अवपर
मैं समता धरि समता सुखदानी ॥ हे नर० ॥५॥ रति ॥ पद ॥
ग्यानी जीव निवारि भरम तम बस्तु स्वरूप बिचारत ऐ
सैं टेक ॥ सुत तिय बंधु धनादि प्रगट पर ये मुझतैं हैं भि
न्य प्रदेसैं ॥ इनकी परणति है इन आश्रित जो इन भाव
परणवै ऐसै ॥ ग्यानी० ॥१॥ देह अचेतन चेतन मैं इन पर
णति होय येक सी कैसैं ॥ पूरन गलन सुभाव धरै तन
मैं अज अचल अमल नभ जैसैं ॥ ग्यानी० ॥२॥ पर परन
मन इष्ट अनिष्ट न बृथा रागरुख द्वंद भये सैं न सै ग्यान
निज फसे बंध मैं मुकि होय समभाव लये सैं ॥ ग्यानी ॥ २०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नतुमतिनिकीआपतिहूसुरपतिनतरसावै॥मुनिवर
भागलीनुतिनमैंनितदौलधवलउपयोगरसावैषा
रा०॥इतिपद॥कुमतिकुनारिंनिहैमलीरे।समतिना
रिसुंदरगुनवालो॥कुम०।टेक।वासंविरविरचौनिं
तयारसंजोपावोसिवधंमगलीरे।सुम०।१॥बहकुव
जाहुखवयहरधाधाधादारनिफुरनरलीरे॥वहका
भावन रीपरसैंरनिवंनवनौंहिंनसीरवभलीरे।सुम०॥२॥प
हयौरीविंदगुणसहचारनरमतसदांसुखमांपिय
लीरे।बासंगकुघलकुल्यौनिंवस्यौनितनहांमहादुख
वेलिफलीरे सुम०।३॥यासंगरसिकभविनकीनिजमैं
पलमतिदौलभईनचलीरे।सुमति॥४॥इति॥पदरा
गभैरव॥चांडवकैंनहिंरेहेनररी।निश्रयानी।वाला
रसिखदेनसुगुरुयेतूरेश्यानाकानीहै[illegible]रं०॥१॥विष
यनतंजतनमज्ञानसुथुधमनदुखसुखजातिनजानी
सरननहेनलहैसदऔ[illegible]नहैतविजोवनपानीहैवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद २२

हितन॥४॥इति॥पदराग॥सोचा तामेरेमनमानां जि
न निजनिजपरपरजानां॥सो॰॥टेक॥वहैदरबतैं
भिंन्नजांनिकैनवतत्वनतैं आंनां ताकौरे खैताकौ
जानैं ताहीके रसमैं सानां॥सो॰॥१॥कर्म सुभासुभ
जौं आवतहै सोतौ परपहचांनां तीनिभुवनकौ
राजनु चाहै यद्यपिगांठिद्रव्यकछूनां॥सोचा॰॥२॥
अखैअनंती संपतिविलसैभवतनभोगविगत
सनां॥धानततोऊरबलिहारी सोजीवनमुकिव
खांनां॥सो॰॥३॥इति॥पद॥हे नरआतम ग्यानीजांनत
यौंनहिरे॥टेक॥रागदोषपुद्गलकीसंपतिनिह
चैसुद्धनिसांनीरे नह॰॥१॥जायनरकपसुनरसुरग
तिमैं॥यहपरजायविरानी सिद्धस्वरूपसदा अ
विनांसी जांनतविरलाप्रांनी॥रेनर॰॥२॥कीयौ नकां
हहरै पनकोई गुरुसिखकौनकहांनी॥जनममरन
मलरहत विमलहै कीचबिनाजौ पांनी॥रेनर॰॥३॥ २२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥३॥ विषयचाहदवदाहनसैनहीबैनजिनसुधावि
धुमैपैसें।भवजिनवैनसुनयनतैंमिटैविभावक
रूविधितैसें॥४॥ऐसीअवसरकठिनपायअव
निजहितहेतनविलंवकरैसें।पिछतावोबहुहोरसमा
नैचैनदौलछुटैभवभयतैं।ग्यानी॥५॥इति॥पद
राग॥हेहितवंछिकप्रांनीकरियहरीतिसयानीहेहि
त।टेक॥हरनभवामयसंपरस्याम्यसरूपीवचसु
खदांनी।दुविधउपधिवाधकसिवसाधकसुगुरुन
जौगुनगांनीहेहेहि॥१॥मोहतिमरहरज्ञाननिभजो
सुतसमासरुजासनिग्रांनी॥सपनतनभवअपर्व
विचारीजोवरनैंनिजवांनीहेहि॥२॥निजपरभिन्न
प्रीछोनिमांनिस्कुनिहोहुआपसरधानी।जोरनौ
विसेसग्यांननननसोवज्ञापनासुनिमांनी।फिरिव्रत
समितिगुपतिसुखिअरतनिमनिसुभावपरं
नी।सुदसरूपाचरनौजीनहैदौलवरीसिवरांनीहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

२२ टेक॥तनविनबसनअसनविनवनवनमैंनि
वसौंनासादृष्टिधरीमेरै॥१॥पुंन्यपापपरसौंक
वविरचौपरचौनिजनिधिरुचिविसरी तजिउ
पाधिसजिसहजसमांधीसहौघामहिममेघझ
री मेरै॥२॥कवथिरजोगधरौंऐसौसोनिसवांनि
उपलमृगवाजिहरीध्यांनकमांनतांनिश्रनु
भवसरछेदौंकादिनमोहअरीमेरै॥३॥कवकंच
कंचनयेकगनौंअरुमनिजटितालयसेलदरी
दौलतसतगुरचरनसेवजौपुरवौआसयेहह
मरी कवहै॥४॥इति॥पदरागविलावलकेउ
वमैं॥निरखिसखीरिषिनकोईस।यहरिषभजि
नपरखिकैस्वपरसौंजछारीटेक।नैंननांसाग्र
धरिमैंनविनसायकरमौनजुतस्वासदिसिसिख
रभिकारी।निरखि०॥१॥धरासमक्षांतिजुननरांम
रतवचनुनविजुनरागारिमददुररहारी।जासक २२

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारपदारथहै तिहूंजगमैं नहिंकोधीनहिंमानी
धानतसोघटमांहिविराजैलखिहूजैसिवथा
नी ॥ रेनर ॥ ३ ॥ पद ॥ धंनिधंनिसाधरमीजनमि
लनकीघरी ॥ जहांवरसतअमृतातापहरनज्ञानघ
नझरी ॥ टेक ॥ जाकेविनपायेभवविपतिअतिभ
री ॥ निजपरहितअहितकीकछूनसुधिपरी ॥ १ ॥
जाकेपरभावचितसुथिरताकरी ॥ संसयभ्रमसो
हकीसुवासनाटरी ॥ धनि ॥ २ ॥ मिथ्यागुरदेवसेवटे
वप्ररंहरी वीत ॥ रागदेवसुगुरसेवउरधरी ॥ धनि ॥
३ ॥ च्यारौंअनुयोगसुहितदेसहिविपरी ॥ सिवम
गकेलाहकीसुचाहविस्तरी ॥ धंनि ॥ ४ ॥ संम्यकत
रुअंरनियेहकरनकारिहरी ॥ भवजलअकूंनरनिसम
रसुजसविधंजरी ॥ धनि ॥ ५ ॥ दरवभवथाअवारर
मनमिवस्मरी ॥ सेत्रैअवसैलपाहियावपहरतरी
धनि ॥ ६ ॥ इति ॥ पद ॥ कबहैगोदिनजोसुधरीमैं ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पतिभयौ नाकपन। अहो जग्य कंलजिसकल
परिग्रहकुग्रहदुसहपरिसहसहौ भार व्रतसारप
न। अहो न॥२॥ पायकेवल सकललोककरवनल
ख्यौ॥ अख्यौ त्रषडद्रा सुनिनसनम्रमरूपननीच
कीचककौ यौ मीचनैं रहन त्यौं रासकौ पासलेनां
सभव्यासपन॥ अहो॥५॥ इति॥ पदचाल रेख्ता
॥ चिदरायगुनमुनौ सुनौ प्रसलगुरुगिरा। समस्त
तजिविभावहौ स्वकीयमैं थिरा टेक निजभावके
ल खाव विन भवाब्धिमैं परा। जामनमरनजराञ
रोस अनिलमैं जरा॥ चिद॥१॥ सादियो अनादि
रो निगोदमैं परा॥ तहां अंकके असंख्यभाववा
न ऊवरा॥ चिद॥ तहां भव अंतमुहूर्तके कहे गणे
स्वरा॥ छ्यासठि सहस्र त्रिंसतछतीस जन्म मरा॥२
यो फिर अनंतकाल फिरनहां तैं नीसरा भूजलअ
निलप्रत्येकतरु मैं नंततनुधरा॥ चिद॥३॥ अन २२

पासभ्र मनौं सपंचास्य भ्रगवासि करि प्रीति कौ
रीतिधारी ॥ निरखि० ।२४। ध्यांन रैमांहि विधिरा रु
पुंजराहि सिरकेस सुभ किंधौं धूवा विथारी फसे
जगपंकजन रंकनि नकाढनें किंधौं जगनाह बाहु
पसारी ॥ निरखि० ।२५। तन्न हाटक बरन बसन विनअ
भरन खरे चिरज्यौ सिरवर मेरु कारी रोल जैसे रैन मि
वधौल जगमौं लजै तिहैकर जोरि वंरनाह मारी ॥ नि
रखि० ।२६। ति ॥ पद ॥ अहो नमिजिन पतितिन पतस
नसुरंय कंंरएपग बरएपु नासन अब लपन अहो
टेक ॥ नांथ तुम बांनि पय पांनि जे करत भविन सेति
निकीजरामरनजां मनतपन । अहो० ।१। अहो सि
वभौंन तुम चरन चिंनौं नजे करत जिनजन भावी
दुखदभवविपन । हे भुवन पाल तुम विवरसुनमांत
उरधैरे ने वहै इक कालमें वपन अहो० ।२। अहो तु
न तुप तुंनरूप चखि बहुमकरिल खनसं तो बधा

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुभवबभेदजपनसरस।राव॰॥१॥गुनाचिनवत
निजअनुभवअगदैविघटैविधिठगदुविधतर
सदैलअवाचीसंपतिसांचीपायरहैथिररसवि
सरस।रावरी॰॥२॥इति॥पदरागजंगलामैं॥सु
निजिनवैनअवनसुखपायौ।टेक॥नसौनख
दुरअभिनवेसनमस्वादउजासमुहायो।चिर
विसरयौलह्यौआनमरैनअवन॰॥१॥दहौअनं
दिअसंजमदेनैलहिवनसुधासिरायौ।धीरध
रीमनजीतनमैन॥अव॰।२॥भयेअभावविभा
वसकलअवअकलरूपविलायौ।दासलह्यौ
अवअविचलचैन।अवन॰।३॥इति॥परमैरव
॥जैश्रीवीरजिनेंदचंदसतइंद्रवंद्यजगतारं।टेक
सिद्धारथकुलकमलरविभवभूधरपविभारं
गुणमनिकोषअदोषमोक्षपथनिविपनकसाय
नुसारं॥जैश्री॰।१॥मदनकदनसिवसदनपदन २६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरीरुकुपकौंनमऊभ्रवनरा। जलथलखचर
कुनरनरकभ्रसुरउपजिमरा। वि०।४॥ भ्रबकैसु
थलसुकुलसुसंगबोधलहिबरा। दौलतिबरल
साधिलाधपदउतनरा। वि०।६॥ इति॥ पद॥ वि
नचिंतकैविदेसकबभ्रसेसपरवसंदुखरा भ्र
पारविधिदुचारकीचसंदसं टेक। नविपुनपा
पघायभ्रापमैंरसं। कवरागभ्राणसमवाणा
धनीससं। वि०॥ टेक॥ दुग्यानभांनगैमिथ्या
भ्रज्ञांननमसदसंकवसर्वजीवंभ्रांनिमस्तमससो
ससं। वि०॥२॥ जवतनलिप्तकलसुकलसवल
पनिबंदविकैबवलनलकबभ्रसलपदव
सं। वि०॥३॥ कवध्यावभ्रजभ्रमरकूकिरिमव
पिंवनमसं। जिनदरिकोलरैलकोपहहेतुहैनसं
वि०।४॥ इति॥ पद राग सोरठा॥ सिवमारगसाव
नपांवत्रैरस॥ टेक॥ परपरणाहंराहपरनोसन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

घनजासज्ञानउबयारीदौलतमनसाकुमदनि
मोहनजयोकर्मजगनासी।चंद्र॥ इति॥ परज
गकाफी॥ जिनवांनीजांनिसुजांनरेटेकलागि
रहीचिरतैंविभावनानाकौकरिअवसांनरेजि
न·॥१॥ द्रव्यखेत्रअरकालभावकीकथनीकूंप
हचांनि॥ जांहिपिछांनतस्वपरभेदसबजांनेपरत
निरंतनरे। जिनवांनी·॥२॥ पस्वजिनंजांनीतिन
हीनैंभांनीसंसयनवांनिरेअवजांनैंअरुजांने
गेजेतेपावैंसिवथांनरे। जिनवा·॥३॥ कहतुबनां
समुनीसिवस्रनीपांयोकेवलज्ञानरे। पौलति
रोलतसतनकरौभविजिनवचअमरतपांनरे
जिन·॥४॥ इति॥ पदरागदीपचंदी॥ भावरहित
नेपसुनिहोमनमेरा।टेक॥ नकोदिकन्यासंग
लिमाहैभटक्योतूअधिकाची। परपरणतिमें
चौविकरोनिजपरणतिनांहिपिछांनीसहैदुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मितनितअनमितपतिसारं।रमाअनंतकंतअं
तकरुतअंतजंतुहितकारं।जैस्री।२।फंदचंदना
कंदनदादुरदुरतितुरतनिस्तारं।रुद्रउपिनयह
रुद्रउपद्रवपवनअरपतिसारं।जैस्री।३।अं
तातीतअचिंतसुगुनतुमकरतलहतकोपारहे
जगभोलदौलतरैकमनमैसीसकरधारे।जैस्री।
४।इति।परमैरव।।वंदूंअद्भुतचंद्रवीरजिनमु
चितचकोरचितहारी।टेक।।सिद्धारथनृपकुलनभ
मंडनखंडनभ्रमतमभारी।परमानंदजलधिवि
स्तारनपापतापक्षयकारी।वंदू।१।। उदितनि
रंतरत्रिभुवनअंतरकीरतिकीरनअसारी।वेय
नअंककलंकअटंकितमोहराहुनिरवारीवंदू।
२।करुनाकरनपयोधअबोधितबोधितबोधीवमय
वारी।मनपारिहिमुनिउडगनसेवनतिनिवस्स
विलिनाजोवंदू।१।।अखिलअलोकाकासउलं

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वासलहैं अबसुपदछंद। निरखि॰ २ ॥ इति
॥ पद जंगलो कैरो ठी ॥ चेतनकौनअनीतिग
ही रे। मांनन सुगुरु कही रे॥ टेक॥ जिनविषयन
वसि बहुदुखपायो तिनसौं प्रीत वही रे। चेत॰ १॥
चिनमय है यदेहादिजडनसौं तोमति पागि रही
रै। चे॰॥ २। संम्यक दरसन ज्ञान भाव निज तिनकै
गहत नही रे। चेत॰ ३॥ जिनवृष पाय विहाय रा
गरुख निजहित हेत यही रे॥ चे॰ ४॥ दौलत जि
न निज सीख धरी उर। तिन सिव सहज लही रे
॥ ५॥ इति॥ पद॥ दीठा भागन सै जिन पाला मो
हनासनवाला॥ टेक॥ सुभग निसंक राग विन
यानें वसन न आयुधवाला। मोह॰ ॥ १ जासु ग्या
न मैं जुगपत भासत सकल पदारथ माला मो
ह॰ २॥ निज मैं लीन हीन इछा पर हितमितव
चनरसाला। मोह॰ ३॥ लखि जाकी छवि आ २९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वपौन घनेरा भाखूं ।१। कुगुरुकुदेवकुपंथपंक
फसिबैं चहुरवे दलहायो । सिवसुखदेन जैन ज
गदीपक सो तैं कवहूं न पायो । मिटान अज्ञान अं
धेरा भाखूं ।२। दरसनज्ञानचरन मेरी निधि सो वि
धिठगनि ठगी । पांचौ इंद्रिनि के विषय निमै तेरी
बुधि लगी मया तिन का तूं चेरा भाखूं ।३। हूं मम
जाल विषै बहु उरझो अब पकरौ सुर केरा दौलत
नमै चरनपंकज का कैतूं भ मर सवेरा । न सै ज्यौ
दुलभ भव केरा भाखूं ।४। इति ॥ पदराग ॥ जिन मु
खचंद निरखि सुख पायो । टेक ॥ मोह महा तम
नाश्यौ मैं है उर अंबुज खकुलापो । ताप नास्यौ
तमन टौ उरधि अनंद । निरखि ।१। चकवी कु
मति विछुरि अति विलखैं आतमसुधा सुनायो
शिवबल क्यै मनि विधिगनें करानिरखि । विकट
मनोहर नि कौन रनि कवैं अब मन कलं लन वायो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nana, Varanasi

जाकी चेतन पद दरसायो। अष्ट कर्म रिपु जो
पाजी ते लिव अंकुर जमायो। आंजि॰। इति॥ पद
॥ मन ऐ भाई दिपा होन जिनवर मैं कामो हि निभाएं
जगदीपा तैसै दिल होत कफा मन॰। टेक। मांनदे
व मैं सब ही वेयै दन केसै यै कहो कौनन फा। मन ऐ॰
१। मुझ नगन सांत रस पोयत देखत ही करदेन वफा
सतगुर संग पाय अब जांनी। सब सुख के प्रभरा
य कमेरे॥ जिन के ध्यायतैं विधि होत सकाम न ऐ॰
इति॥ पद॥ सो सो बार तो हि समुझायो रे। सो सो॰।
टेक। देखि दें सुगुरु की परहित मैं रत हित उपदेस
सुनायौ रे॥ सो सो॰। १॥ विषय भुजंग से य दुख पायो
कुनित निसो लपटायो रे॰। सो सो॰। २॥ नन धन सज
न ने है है मेरे। नाहक ने हल गायो रे सो सो॰॥ ३। कौन
न जै सम चारव समांस न जो नित संमसुहायो रे सो॰
४॥ अब बहु सम फिक दिन यह नर भव जिनु वंवि २३

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमनिधिपावतहोननिहालामो·।४।दोलनासुगु
नचिंतवरतहैनिकटभवनालामोह·।४।इति॥प
दसोरठा॥सांतिमूरतिजगसुखदाई।एहमनभा
ईयांकौ।टेकं।सुभकीघरीआईअवमेरै।रसना
हरषितनुमनगुनगाई।जीमन·।१।नांयनिहारोतु
मकैनयनांकठिनफलकएहपाई।अवनिश्चै
यहदिलधारे।होतसकलहैमननचाहेजीमन·।२
इति॥पदराग॥गुरुवेहमाराकव·अवलोकैहेजी
पुनरानीना।टेक।सवेसुगिवनयांनविराजैराग
द्वेषकछीहीनाहैजी·।।१।।छविसतजैसहैपरोसा
पर्मशांतिरसलीना।सोहीममदिलवसौजोनि
तनयापरनतरतपरवीना।हैजी·।।२।।इति॥पद॥
थांकेमैपरसंपदारसपायौ।प्रभुचरणनैचितकी
लायो।टेक·अवसुभगमेसुभअवटमनैहै॥सहज
कलकलकछायो।आजि·।१।जानसकितनपश्रौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अपनी॥१॥ इंद्रीय सुख दुख मैं नित पागि
पाग हरख मै। बिन रायक भव विपति अंबर बंध
कौन लयौ। अपनी॥२॥ चाह दाह दहै त्यागौ न ता
हि चाहै समता सुधा न गाहै जिन निकंट जो बता
यौ। अपनी॥३॥ मांनुष भव सुकुल पाय जिनव
र सासन लहाय दौल निज सुभाव भजि अनादि
जो न ध्यायौ अपनी॥४॥ इति॥ पद सोरठ॥ धनि
मुनि जिनकी लगी लौ सिव वौरनैं। टेक। सम्यक
दरसन ज्ञान चरन विधि धरत हरत भ्रम चोरनैं
धनि॥१॥ यथा जात मुद्रा जुत सुंदर सदन विजन
गिर कोरनैं। तृण कंचन अरि स्वजन गिनत सम
निंदन और निहोरनैं धनि॥२॥ भव सुख चाह स
कल तजि बल सजि करन द्विविध तप घोरनैं। प
रम विराग भाव पवितैं नित चूरत करम कठोरनैं
॥३॥ धनि॥ छीन सरीर न हीन चिदानन मोहत मोह २२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नागमा पोरे ।सो॰ ६॥ ते बिलके मृगा डारि उदधि
मैं दौलनि कौ पछिताये रे ।सो सो॰॥ इति॥ पद रा
ग॥ निरखत जिन चंद्र बदन स पर सुरुचि आ
ई॥ टेक॥ प्रगटी निज आनि की पिछानि ग्यान भा
न की कला उद्योत होत काम जामिनी विलाई। निर
खि॰ ॥१॥ र चा सत आनंद स्वाद पायो बिनस्यो वि
षाद आंन मैं अनिष्ट इष्ट कलपना नसाई। निर
ख॰ ॥२॥ साधी निज साध की समाधि मोह व्याधि की
उपाधि को विराधि कै आराधना सुहाई॥ निर॰ ॥३॥
धन दिन छिन आज सुगुन चिंतें जिन राय अबै
सुघरे सब काज दौल अचल रिद्धि पाई। निरख
॥ इति॥ पद॥ अपनी सुधि भूलि आप आप दु
ख उपायो ज्यौं सुक नभ चाल बिसरि नलनी लट
कायौ॥ टेक॥ चेतन अविरुद्ध सुद्ध दरस बोधमय वि
सुद्ध तजि जड़ रस फरस रूप पुद्गल अपनायो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नागमायेरे।सो॰ ६॥ते बिलके मणिडारि उदधि
मैंदैलनिकौपछिताये रे।सोसो॰॥इति॥पद रा
ग॥ निरखत जिनचंदवदन स्वपरसुरुचि आ
ई॥टेक॥ प्रगटी निज आनि की पिछानि गयान भा
न की कला उदोत होत काम जामिनी विलाई॥ निर
खि॰१॥ स्वासम आनंद स्वाद पायौ विनस्यौ वि
षाद आन मैं अनिष्ट इष्ट कलपना नसाई॥ निर
ख॰२॥ साधी निज साध की समाधि मोह व्याधि की
उपाधि कौं विराधि के अराधना सुहाई॥ निर॰ ३॥
धन दिन छिन आज सुगुन चिंते जिनराय अबै
सुधरै सब काज दौल अचल रिद्धि पाई॥ निरख
४॥ इति॥ पद॥ अपनी सुधि भूलि आप आपदु
ख उपायौ ज्यौं सुक नभ चालि विसरि नलनी लट
कायौ॥टेक॥ चेतन अविरुद्ध सुद्ध दरस बोधमय वि
सुद्ध तजि जड़ रस फरस रूप पुद्गल अपनायौ॥

५२

भजि निरागतारै। हे नर ॥६॥ इति ॥ पद ॥ धोत

मसूप अनूपम अरु तू नया हित रसैमव सिंधु

तरो ॥ टेक ॥ अतुप कासमै भरत चक्रनवनि

नआतम कूआ पसरो। केवल ग्यान पाय भयवे

घेत तबिन पायो लोक सिरो ॥१॥ या विनसमके

द्रव्य लिंग मुनि उग्र तप कीकरि भार सह्यो। निजवी

वक पर विंन नाय विपकै सभवा रण मांहि परे

आतम ॥२॥ संयम करस मन ग्यान वरन तप पे हो

जगत मैं वार नरो। दरव लिंग कंग पैजाय अव

फिरि जैहै यह निय तकरो आतम ॥३॥ कोटिनंप

कोभ्रर यही है यैही जैन वांनी उचरो। दास आवत्र

पैनैं आतम अनुभूति रमा को वेग वरो। आतम रूप

रूप अनूपम ॥४॥ इति सील निरधर्व कपद समं

र्ण ॥ अनुभव ॥ इलास रवै विरयन बाल एको

॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ माप ... ॥ ... रविवार ॥ २२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi